

# गौरी पूजा

५ अक्टूबर १९८६, पुणे,

पूना शहर का नाम वेदों में, पुराणों में सब जगह मशहूर है। इस को पुण्यपट्टणम कहते हैं। पुण्यपट्टणम और इस जगह जो नदी बहती है उसका नाम है मूल नदी। जो यहाँ से मूल बहता है, ऐसी ये नदी। यहाँ पर हजारों वर्षों से बह रही है और इस भूमी को पूण्यवान बना रही है।

हम लोगों को पुण्य के बारे में पूरी तरह से मालूमात नहीं है। बहुत से लोग सोचते हैं अगर हम गरीबों को कुछ दान दे दें या कोई चीज़ किसी को बाँट दें या कभी हम सच बोले या थोड़ी बहुत कुछ अच्छाई कर लें तो हमारे अन्दर पुण्य समा जाता है। इस तरह का पुण्य संचय होता तो होगा लेकिन वो एक बुँद, बुँद, बुँद बनकर के न जाने कब सरोवर हो सकता है। पुण्य का जो अर्थ है, उसको जैसा जाना गया है कि ऐसे कार्य करना कि जिसे परमात्मा संतोषित हो, जिसे परमात्मा खुष हो ऐसे कार्य हमें करने चाहिए। और जो आदमी ऐसे कार्य करता है वही पुण्यवान आत्मा होता है क्योंकि जब वो परमात्मा को खुष कर देता है, उस पर जो आशीर्वाद परमात्मा के आते हैं वो उसको पुण्यवान बना देते हैं। परमात्मा की शक्तियाँ उसके अन्दर आ जाती हैं वो उसके अन्दर एक नयी चेतना कहिए या नया व्यक्तित्व कहिए, एक नयी हैसियत कहिए प्रगट करती है। उस हैसियत में मनुष्य ऐसा हो जाता है कि जो वो कहीं भी जायें, किसी भी घर में जाए, किसी भी दालान में जाए, किसी आँगन में जाए, किसी देश में जाए, विदेश में जाए जहाँ भी जाएँ वहाँ परमात्मा का आशीर्वाद झरने लग जाता है। जैसे की एक छत्रछाया सी उसकी बन जाती है। ऐसे पुण्यवान पुरुष कहीं भी रहते हैं उस जगह किसी भी तरह का प्रकोप होना हो तो वो टल जाता है। ऐसे लोग जब कभी शहर में, जंगलों में कहीं भी घूमते रहें तो वहाँ जितनी भी दूर्घटनायें होने वाली होती हैं वो सब खत्म हो जाती हैं।

इस पुण्यनगरी में इन्होंने जन्म लिया है वो विशेष पुण्य लोग हैं। पुण्यवान लोग हैं। और इस पुण्याई में उन्होंने जो यहाँ कुछ पाया है उसे उन्हे अब आगे पाने का है। लेकिन जब पुण्यवान मनुष्य पुण्यनगरी में पैदा होता है तो अपने को वो दूसरों के साथ तौलने लग जाता है। वो ये सोचता है कि 'देखो, हमने तो इतना पुण्य किया इसलिए हम यहाँ पैदा हुए।' लेकिन यहाँ के लोगों के पास जो पैसा है, जिनके पास धन-दौलत है वो तो दूसरे ही लोग हैं। वो तो परमात्मा को भी नहीं जानते, भगवान को भी नहीं मानते और पूजा-अर्चा भी नहीं करते। पर इनके पास तो इतना पैसा है, इतने धनवान लोग हैं। ये तो इतने सुखी लोग हैं। तो हम क्यों इतने दुःखी? अगर हम पुण्यवान हैं तो हम दुःखी क्यों हैं? ऐसा उसके दिमाग में विचार आता है। जब ये विचार उसके अन्दर आ जाता है तो फिर या तो वो सोचता है कि हमारे समझ में आयी नहीं बात कोई हर्ज नहीं ऐसा सोचकर के अपने धर्म में जुटा रहता है। और या तो वो बदल जाता है। और वो सोचता है कि नहीं किसी तरह से भी पैसा जोड़ना या दुनिया की चीज़े दौड़ना, दुनिया की इज्जत जोड़ना यही सब से बड़ी बात है। और उसी एक नये दौर में वो दौड़ने लग जाता है। तब उसका पुण्य क्षय हो जाता है। उसका सारा पुण्य नष्ट हो जाता है। लेकिन पुण्यवान पुरुष को पैसे की इच्छा होना बड़े आश्चर्य की बात है। कलयुग में सबकुछ हो सकता है। मुझे ये देखकर आश्चर्य होता है कि कलयुग में अगर कोई रियलाइज्ड सोल पैदा हो वो भी शराब पी सकता है, ड्रग्स ले सकता है, मारामारी कर सकता है, दुनियाभर के काम एक रियलाइज्ड सोल, जिसे हम पुण्यवान मनुष्य समझते हैं वो ये सब कर सकता है, ये कलयुग का खिंचाव है। उसका एक तरह का असर है, उसका वातावरण इतना जबरदस्त है कि पुण्यवान मनुष्य भी जब संसार में आता है और इस चीज़ की तरफ उसकी नज़र जाती है तो वो उधर खिंच जाता है। और उसके अन्दर ये कमजोरियाँ धीरे-धीरे आने लग जाती हैं। ये कलयुग की एक बड़ी भारी हमारे उपर में दहशत है।

लेकिन इसका एक दूसरा इलाज है, ये जो दहशत हमारे उपर है, और जो हमारे उपर कलयुग छाया हुआ है ये अगर सोच विचार करें तो क्यों आया? कलयुग आने की जरूरत क्या थी? अगर कलयुग आया है तो उसका भी तो कोई कारण होना चाहिए।

उसके बारे में एक दमयंती आख्यान में लिखा हुआ है कि एक बार दमयंती के पती नल को 'कली' मिल गया। उसने उसे पकड़ लिया। उसने कहा कि "देखो, तुमने हमारे पत्नी से बिछो करारा था और इतना हमें दुःख-दर्द दिया, अब मैं तुम्हें मार डालूंगा।" तो कली ने कहाँ, "हाँ भाई, ये तो बात सही है। तुम चाहो तो मुझे मार डालो। लेकिन मेरा भी एक महात्म्य है।" उसने कहा, "तुम्हारा क्या महात्म्य हो सकता है? तुम तो सब दुनिया में भ्रम डालते हो। उनको विभ्रम में फँसा देते हो और गलत रास्ते पर लोग चले जाते हैं।" तो उन्होंने कहा कि, "महात्म्य बहुत बड़ा है कि जब ऐसा होता है और ऐसी हालात में ही मनुष्य की अग्नीपरिक्षा होती है, उस वक्त वो जाना जाता है कि आदमी कितना सच्चा है, कितना झूठा है। इसी तरह से पहचाना जा सकता है कि आदमी में कितना पुण्य है, कितना अपुण्य है। अगर उसके आगे कोई अग्नीपरिक्षा न हो तो वो जाना नहीं जा सकता।" जैसे की बायबल में कहा गया है कि जो मनुष्य कलयुग में पैदा होगा उसका लास्ट जजमेंट हो जायगा। उसको जाना जायेगा की उसमें पुण्य कितना है, अपुण्य कितना है। तो इसका ये महात्म्य है कि इस से हमारी अग्नीपरिक्षा होती है। और उसने ये भी कहा की इतना ही नहीं की अग्नीपरिक्षा होगी, अग्नीपरिक्षा जो हमारी होने वाली है इस कलयुग में, इस कलयुग के वक्त में हमारे लिए एक और बड़ा भारी आशीर्वाद है, वो ये की नल को बताया गया की देखो जिस वक्त कलयुग आएगा, जिस वक्त ये अग्नीपरिक्षा होगी तब हजारो लोग पार हो जाएंगे। हजारो लोगों को आत्मज्ञान हो जाएगा, आत्मबोध हो जाएगा, आत्मसाक्षात्कार हो जाएगा। और इस आत्मसाक्षात्कार के सहारे वो एक नयी जिंदगी को प्राप्त होंगे और उनमें परिवर्तन हो जाएगा। जो आज गिरीकंदरों में परमात्मा को खोजते फिर रहे हैं वो उसे प्राप्त करेंगे।

ये इसका वरदान है इसी बीच हम यहाँ पुना में आए हुए हैं। जिसको की मैं पुण्यपट्टणम कहती हूँ। जहाँ आने से मनुष्य को पुण्य का प्रभाव पता चल सकता है। यहाँ भी अगर आप सोचे तो आपको लगेगा की यहाँ भी वही कलयुग है जो जहाँ है, जैसे वहाँ पर था वैसा ही है। ये बात जरूर मानी जानी चाहिए कि जो बात छिपी हुई है, जो चीज़ दिखायी नहीं देती उसके बारे में बात करने से कोई फायदा नहीं। लेकिन जब ये चीज़ खुल जाती है, आपके अन्दर की चेतना जब खुल गयी है उससे जब आप जानेंगे तो आपको आश्चर्य होगा की इस पुना में इतने गहनता के कार्य हुए हैं यहाँ पर अनेक साधुसंतों ने बैठकर के तपश्चर्या की हुई है। तुकाराम जैसे इतने बड़े महान पुरुष इसी पुना के पास ही में आये और रहे। उनका यही वास्तव्य है। तो इसका जो आकर्षण है वो उन लोगों के लिए है जो पुण्य को खोजते हैं और पुण्य में डुबना चाहते हैं। उन लोगों के लिए नहीं जो पैसा ढूँढते हैं और दुनियाभर की दौलत ढूँढते हैं क्योंकि वो तो सिर्फ अपने लिए है। किसी दुसरे के लिए नहीं। जो हम पैसा इकट्ठा करते हैं या चीज़े इकट्ठा करते हैं। जो हम अपने लिए सत्ता इकट्ठा करते हैं या हम इसी तरह का बड़ा भारी नाम, जिसे फेम कहना चाहिए इस तरह का नाम इकट्ठा करते हैं ये सब अपने लिए। लेकिन पुण्य जो है वो दुसरो पर असर करता है। जैसे एक दीप है। आपको उसकी सफाई करनी है। तो आप उसमें कुछ भी चमका दीजिए, कुछ आप चाँदी का बना दीजिए, चाहे आप सोने का बना दीजिए उसे जिस भी चाहे चीज़ का बना सकते हैं। उसमें जो भी मेहनत करना चाहे कर सकते हैं। लेकिन बेकार क्योंकि इस में दीप नहीं जला। जब इस में दीप जलेगा तभी इस का उपयोग है। इसी प्रकार मनुष्य कुछ भी हो बेकार है। जब तक उसके अन्दर आत्मा का दीप नहीं जलता तब तक वो बेकार है। जब उसमें दीप जल जाता है, तो वो पुण्यवान आत्मा हो जाता है। और उसके अन्दर से बहता हुआ प्रकाश हजारो दीप संसार में जला सकता है।

इसलिए आज की पुण्यनगरी में इस पूजा का आवाहन बहुत बड़ी चीज़ है। शक्ति का संचार जब पुण्य में हो तो वो पुण्य हजार गुणे बढ़कर के अत्यंत शक्तिशाली बन जाता है। पुण्य की शक्तियाँ अनेक हैं। लेकिन उसके अन्दर शक्ति ही संचलित हो जाये तो फिर क्या कहने! पुण्य अभी तक हमने जो जो जाना है वो ऐसा ही है, पुण्यवान लोग जो होते हैं उनको सब लोग सताते हैं। उनको परेशान करते हैं। उनके पास कोई धनसंपत्ती नहीं होती। उनके पास किसी तरह का कोई संरक्षण, प्रोटेक्शन नहीं होता है। वो हर समय दबे रहते हैं लोगों से। और उपर जो चाहे वो खिंच ले जाता है। जो चाहे उन्हें बेवकुफ बना सकता है। लेकिन शक्ति का संचार होते ही वो प्रगाढ़, प्रचंड प्रकाश निकलते हैं कि किसी की मजाल नहीं की किसी पुण्यवान आदमी को हाथ लगाये। जो हाथ लगाएगा वो जानेगा की ये कोई प्रचंड चीज़ है। इसी प्रकार अगर कोई आदमी ये चाहेगा कि उनका पैसा नोच ले

या उनको ठग ले या सताये तो सता नहीं सकता। ये कलयुग है और आप पर बड़ा भारी आशीर्वाद है कि कलयुग में ही प्रकाश आ सकता है। और जैसे ही अन्दर ये प्रकाश आ जाएगा कोई आपको छू नहीं सकेगा। कोई आपको परेशान नहीं कर सकता। कोई आपकी हत्या नहीं कर सकता। कोई आप से कोई चीज़ छीन नहीं सकता। आप पूरी तरह से संरक्षित हो जाते हैं। और आप स्वयं इतने शक्तिशाली होते हैं कि जहाँ खड़े हो जाइयेगा वहाँ कौनसा भी आतंक, आफत, परेशानी हो उसे आप एकदम खड़े होने से ही खत्म कर सकते हैं। तो पुण्य में शक्ति का संचार यही आज का आवाहन है और आज की पूजा में यही करना है।

मराठी भाषा फार चांगली आहे कारण तिला तोड नाही. विशेषकरून सहजयोग हा मराठी भाषेतच समजवता येतो. आणि या ज्या गोष्टी मी हिंदी सांगितल्या त्याला कारण असे आहे की हिंदी लोकांमध्ये तुम्हाला आश्चर्य वाटेल आपल्या संस्कृतीबद्दल फार कमी माहिती आहे. त्यांच्या भाषेतच नाही. त्यांना काही माहीतच नाही. पुण्य म्हणजे काय ते माहीत नाही. तेव्हा थोडेसे हिंदीत बोललेले बरे कारण तुम्हाला सगळं आधीच पाठ आहे, सगळं माहिती आहे. सगळं पाठ आणि नंतर सपाट तसाही प्रकार आहे म्हणा. पण तरीसुद्धा असे म्हटले पाहिजे की आपल्याला फार मोठी संतांची इथे शिकवण जी मिळालेली आहे हा एक इतका मोठा आशीर्वाद आहे. त्या आशीर्वादाने संस्कृती म्हणजे काय ते आपल्याला माहिती आहे. पुण्य म्हणजे काय ते आपल्याला माहिती आहे. चांगले-वाईट काय ते आपल्याला माहिती आहे. कळतं पण वळत नाही. कळतं सगळं की हे सांगितलेले आहे, हे वाईट आहे. असा पुण्यसंचय आपण पुष्कळ केलेला आहे. म्हणूनच या पुण्यामध्ये, या पुण्यनगरीमध्ये आपला जन्म झाला हे कबूल, पण तरीसुद्धा इतर लोकांना बघून आपल्याला असं वाटतं की बुवा आम्ही पुणेकर म्हणजे काही जास्त श्रीमंत नाही, मुंबईकर जास्त श्रीमंत आहेत. त्याच्याहून असं वाटतं की मुंबईपेक्षा दिल्लीचे लोक अधिक श्रीमंत. त्यांच्याजवळ पैसे जास्त असतात. तिथे दिल्लीला तखतच असल्यामुळे तिथे त्यांच्याजवळ मान, पान, आदर हे सगळं काही बाह्यतः पुष्कळ दिसतं. तेव्हा असं वाटतं केवढे मोठे लोक आहेत हे. ह्यांचे केवढे मोठे पण आमचं काय, आम्ही गरीब अजून. पण तुम्ही पुण्यवान आहात. पण ह्या पुण्यातच असे लोक आहेत देवालाच मानत नाहीत. मोठे मोठे धुरंधर मी पाहिले. मोठे, मोठे विद्वान लोक मी पाहिले ते देवालाच मानत नाही म्हणजे इतके शिष्ट झाले ते.

या पुण्यात राहून, या पुण्यनगरीत राहूनसुद्धा लोक इतके शिष्ट झालेत. इतकं डोकं त्यांचे खराब झाले आहे की ते म्हणतात की 'देवच नाही.' अहो, तुम्ही देवाला पाहिलचं नाही, देवाला जाणलचं नाही तर तुम्ही इतक्या अरेरावीपणाने कसे म्हणता की देवच नाही म्हणून. आधी बघा तर खरी. एक अनुभव तर घेऊन बघा. त्याच्यात तुमचं काय नुकसान होणार आहे. काहीच होणार नाही. पण तुम्ही स्वतःला जाणलेलच नाही आहे. तेव्हा जे सगळे सांगून गेले ते सगळे मूर्ख होते. आम्ही अतिशहाणे. आणि आम्ही असे म्हणतो की परमेश्वरच नाही. आणि आता तुम्ही परमेश्वर सिद्ध करून दाखवा, नाहीतर आम्ही परमेश्वर मानायला तयार नाही असं जरी म्हटलं तरीसुद्धा त्याला तयारी आहे पण 'आम्ही मानतच नाही परमेश्वर आहे' असं म्हणून कुणी डोळे झाक केली तर अशा माणसाला समजावणं फार कठीण जातं. आणि तशातले बरेच लोक या तुमच्या पुणे शहरात आहेत. बरेच लोक आहेत म्हणजे इतके कुठेच नाहीत, जे उघडपणाने म्हणतात की परमेश्वर नाही. असे इतके लोक कुठेच नाही. इतके तुमच्या पुणे शहरात आहेत. जितके इथे गणपती आहेत आणि त्याच्याहून जास्त मारुती आहेत त्याच्याहूनही हे महामारुती बसलेले आहेत. अतिशहाणे. आणि त्यांना असा पूर्ण विश्वास आहे की आम्ही जे म्हणतो ते अगदी खरं आहे. आम्ही अति हुशार लोक आहोत. आम्हाला सगळं शास्त्र माहिती आहे. आम्ही अगदी विद्वान आहोत आणि हे सगळं खोटं आहे. याच्यात काही अर्थ नाही. तेव्हा जिथे एवढं पुण्य आहे, तिथे इतका कमळासारखा जो सुंदर सुगंध पसरला आहे तिथे यांचा विकृतपणा पुष्कळ पसरला आहे आणि त्यामुळेच या पुण्यामध्ये लोकांच्या डोक्यामध्ये भ्रांती फारच वाढलेली आहे. त्यांना हेच समजत नाही की धर्म आहे खरा की नाही, परमेश्वर आहे किंवा नाही. हे मोठे, मोठे धुरंधर, स्वतःला मोठे लीडर म्हणवतात. म्हणा तसे पैसेबिसे खूप खातात ते. सगळं करतात. धंदे सगळे करतात. पण ते बरंय. ते म्हणतात आमचा परमेश्वरावरच विश्वास नाही आणि धर्मावर पण नाही. आम्ही चांगलेपणाने कशाला रहायचे, कसेही राहिले तर चालेल. आम्ही मॉडर्न झालोत. अशी मंडळी पुण्याला जास्त आहेत

मुंबई पेक्षा, तुम्हाला आश्चर्य वाटेल. मुंबईला तरी लोक भितात. इतकं कुणी बोलणारं मी पाहिलं नाही, पण पुण्याला मराठी भाषेत बोलणारे असे अनेक झालेत. परमेश्वराची टिंगल करायची. परमेश्वर नाही म्हणून सिद्ध करायचं. परमेश्वरावर मनुष्याने विश्वास ठेवला म्हणजे तुम्ही महामूर्ख आहात, असं कशाला करता? असे म्हणणारे सुद्धा इथे लोक आहेत. मग असे असल्यावरती, समजा एखाद्या बोट ला एक जरी भोक पडलं तर ती बुडते आणि इथे इतकी भोक असल्यावर पुण्याचं काय होणार? त्यात भर घातली आहे भिकारड्या लोकांनी. भिकारडे लोक म्हणजे असे की सहजयोगात सुद्धा लोक भितात. पुण्याच्या लोकांना बोलवायचं म्हणजे माताजी, पुष्कळसे असेच लोक येणार. तुम्ही बघा. मग त्यांचे कसे करायचे? म्हणजे भितात त्या गोष्टीला. भिकारडेपणा करायचा. आम्हाला अनुभव इथला असाच आहे. इथे आलं म्हणजे फुकटात जेवायला मिळालं तर उत्तम. माताजी करतात, माताजी पैसे द्यायला तयार आहेत ही एक प्रवृत्ती, म्हणजे मनाची श्रीमंती नाही. आणि ही येण्याचे कारण सुद्धा हेच आहे की जे पुण्य पुण्य म्हणून शिकवतात, ज्या लोकांनी पुण्य पुण्य करा म्हणून म्हटलेले आहे, जे लोक तुमच्या समोर येऊन प्रवचनं करतात ते स्वतः पैशाच्या मागे असल्यामुळे बाकीच्या लोकांना असं वाटतं की हे तरी काय आम्हाला ब्रह्मज्ञान सांगायला बसलेत. पण स्वतः हे असेच आहेत. तर सर्व जनतेमध्ये या दोन्ही गोष्टींचा परिणाम झालेला आहे. एकतर जे धर्म प्रवर्तक आहेत, धर्माबद्दल जे बोलतात ते स्वतः पैसे खातात. 'तुम्हाला काय पाहिजे?' असं विचारतात. 'मुलगा पाहिजे ना. चालेल. मग शंभर रुपये द्या.' आणि जर तुम्ही पन्नास रुपये दिले तर तुम्हाला मुलगी होणार. 'नाही बाबा, शंभर काय, एकशे आठ घ्या पण आम्हाला मुलगाच पाहिजे.' कशाला मुलगा. म्हणजे उद्या पैशाला बरा. सुनेने हाकलून लावलेले कुणाच्या लक्षात येणार नाही. पण त्यासाठी म्हणून आम्हाला मुलगा पाहिजे. पैसे कमवता असला पाहिजे. आणि त्याने मग दरिद्रता वाढत गेली. आणि ती दरिद्रता स्वभावातसुद्धा आलेली आहे. आणि सगळीकडे तुम्ही रोज, आता हजारो देवळं आहेत, प्रत्येक देवळात गेलं की त्या देवाला पैसे घाला. अरे त्या देवाला काही पैसे समजतात का? त्यांनी कधी पाहिले आहेत का पैसे काय असतात तो प्रकार? त्यांना पैसे घाला. देवाला इथे तुम्ही चार पैसे घाला, तिथे पैसा घाला म्हणजे झालं. पूजा करायची म्हणजे काय, एवढा मोठा नारळ आणा. त्यातला आम्ही तुम्हाला एवढा नारळ देतो बाकी सगळं आमच्या पोटात.

हे रोज अगदी बघून बघून माणसाच्या मनाची जी श्रद्धा, जिच्यामध्ये आंतरिकता असायला पाहिजे, ज्याच्यामध्ये स्वच्छता असायला पाहिजे, ज्याच्यामध्ये विश्वास असायला पाहिजे त्याच्याजागी फक्त आता आहे ना देखल्या देवा दंडवत! बस, त्याच्यापुढे काही नाही. ही एक प्रवृत्ती आल्यामुळे, पैसाच सगळं काही झाल्यामुळे कसही मिळालं तरी चालेल. मान-पान, स्वतःच्या बदल काही आत्मसन्मान ह्याचा कुणाला विचार राहत नाही. आत्मसन्मान नकोच, कशाला, मिळतं ना मग. देतात ना, मग कशाला घ्यायचं! तर ह्या एका फारच विचित्र परिस्थितीमुळे पुण्यामध्ये सुद्धा जी आपण प्रवृत्ती बघतो ती अशी की एवढ्या पुण्यवान स्थितीमध्ये, इतक्या पुण्यवान जागेमध्ये साधु-संत दिसत नाही. साधुंची लक्षण दिसत नाही. साधु सारखं लोकांचे वागणे दिसत नाही. साधुला केवढा मान असतो. एखाद्या साधुला घरी बोलवायचं म्हणजे जन्मजन्मांतरीची तुमची तपस्या पाहिजे. नाहीतर तो तुमच्या दारात येणार कशाला? म्हणजे खरा साधु म्हणते मी. उपटसुंभांची गोष्ट सोडा. तो तुमच्या दारात येण्यासाठी तुम्हाला केवढं तरी पुण्य खर्च करायला पाहिजे तेव्हा तो तुमच्या दारात येईल. पण आता उठल्यासुठल्या इथे रस्त्यावरती साधु-संत फिरतात. त्यांच्यामध्ये काही साधुता नाही आणि ती साधुता नसल्यामुळे, पुण्यनगरी काय ह्याच्यातील देवळामुळे पुण्यनगरी झालेली नाही, तर ती इथल्या मानवांच्यामुळे झालेली आहे. यांच्या मानवामध्ये किती साधु आणि संत आहेत? किती जणांमध्ये साधुची लक्षण आहेत? तर इथल्या लोकांमध्ये जी एक स्वतःची क्वालिटी आहे, स्वतःचे जे एक चारित्र्य आहे ते कसे? त्याच्यावर पुण्य अवलंबून असते. ते जर पुण्य आपण कमवलेले असले, आत्मसन्मानाचे तसेच आत्मसाक्षात्काराचे जर आपण पुण्य कमावले आणि त्यात आपण आपली वाढ करून घेतली तर इथे काही कठीण काम नाही कारण इथली जमीन फारच सुपीक आहे. पुण्याई साठी संबंध ब्रह्मांडात पुण्यासारखी जमीनच नाही. पण जमीन असली तरी प्लॅस्टिकच्या बियांनी काही झाडे येणार नाहीत. आणि प्लॅस्टिकच्या बिया लावून ठेवल्या तुम्ही तर करायचं काय आम्ही? अत्यंत सुपीक जमीन आहे, पण डोकी सुद्धा सुपीक आहेत इथे की त्या सुपीकपणामध्ये जे जे निघाले आहे ते मी तुम्हाला

सांगितले आहे इथे की देवावर विश्वास ठेवायचा नाही. देव म्हणजे कोण? बाह्यात असं काही म्हणजे अत्यंत कमी दर्जाचे लिखाण सुद्धा काही लोकांनी करून ठेवलं आहे. देवाची टिंगल करायची. जसं काही त्यांच्या खिशातच बसला आहे देव! त्याच्याबद्दल काही आदर, काहीसुद्धा नाही.

दुसरे लोक जे सांगितले मी की त्यांनी धर्माच्या नावाखाली इतकी कमाई केली. लोकांची इतकी दिशाभूल केली. तऱ्हेतऱ्हेचे प्रकार आम्ही पाहिले. इथे पुण्याला मी जेव्हा पहिल्यांदा आले होते, तेव्हा माझ्या प्रोग्रॅमला एक बाई आल्या होत्या. पुष्कळ लोक होते. त्यांच्या अंगात भूत आलं. त्या लागल्या हूं हूं करायला. सगळ्या बायका कुंकू लावायला धावल्या. पहिल्यांदा मी पाहिला हा प्रकार काय मूर्खपणाचा आहे. तिच्या अंगात भूत आलं तिला कुंकू लावयला कशाला धावले? तिच्या पाया पडायला लागले. लाईटसचे गेले नशीबाने. मी मागच्या दारातून निघून आले, म्हटलं या लोकांना काय सांगावे? म्हणजे हे सगळे असून महामूर्खपणा सुद्धा आहे. म्हणजे एका बाईच्या अंगात आलं म्हणजे ते अंगात येतं हे त्यांच्या लक्षात येत नाही. अंगात आलं म्हणजे देवी आली. 'अहो, देवी कुणाच्या अंगात येणं सोपं काम आहे का?' कठीण काम आहे. देवीला झेपू शकतं का कोणतेही अंग. अंगात म्हणे देवी आली आणि ही देवी म्हणे नंतर भांडी घासते. लोकांची धुणी धुते आणि पैसे मागते आणि मग तिच्या अंगात देवी येते. हा जो धर्मभोळेपणा किंवा बाभळेपणा म्हणा, पण मी ह्याला महामूर्खपणा म्हणीन, हा इतका जास्त आहे की त्याच्यामुळे लोकांना दिशाभूलच म्हटलं पाहिजे. पण एक तऱ्हेची भ्रांती आलेली आहे. आमच्या इथे पुष्कळ अशा लेडीज येत होत्या की त्यांच्या अंगात देवी यायची, सगळं व्हायचं. झीट येऊन पडायचं. माझ्यासमोर आल्या की झीट यायची त्यांना. म्हणजे प्रोग्रॅमच करणं कठीण झालं होतं. तेव्हा म्हटलं पुण्यनगरीत भूतं कुठून आली बुवा! अमके बुवा, तमके बुवा असं का? मग त्या बुवांनी केलं काय? 'नाही, फक्त अंगारा दिला मला.' 'हो, का! मग तुम्ही काय केलं?' 'मी खाल्ला तो.' झालं. याला म्हणायचे स्त्रीआचार आणि ब्राह्मणाचार. याच्यामध्ये हे सर्व पुणे बुडून गेले आहे. तेव्हा धर्माचा हा तुम्ही निकाल लावला आणि बाकी परमेश्वराची तर तुम्ही गोष्टच काढू नका. परमेश्वराच्या गोष्टीबद्दल अतिशहाणे बसलेच आहेत सांगायला की परमेश्वर म्हणजे नाहीच आहे. सायन्स म्हणजे सगळं काही.

आता नारळीकर हे पुण्याचेच आहेत. त्यांनी असं सांगितलं की ह्या ज्या संबंध सृष्टीला जे कार्यकर्ते इथे त्याच्यामध्ये इंटेलिजन्स आहे. त्याला डोकं आहे. ही पहिली गोष्ट त्यांनी सांगितली. सायंटिस्ट आहे तो पण पुण्यातला आहे. त्याच्या डोक्यात आली ही गोष्ट. पण तरी सायंटिस्ट जाणार कुठपर्यंत? बाहेरून तुम्ही जर एखाद्या झाडाची निगा ठेवायची म्हटली आणि जर पानाला तुम्ही पाणी दिले तर जाणारं का आतमध्ये? फुलाला दिले पाणी तर जाईल का आतमध्ये? नाही जाणार. तुम्हाला त्याच्या मुळातच पाणी घालायला पाहिजे आणि त्याच्या मुळात पाणी घालण्यासाठी तुम्हाला उतरायला पाहिजे आणि त्यासाठी तुम्हाला सुद्धा सूक्ष्म झालं पाहिजे. ती सुक्ष्मता आल्याशिवाय तुम्ही काहीही कार्य केले तरी ते बाह्यातलं आहे. सगळं बाह्यात राहून जाणारं. पण इतकं बाह्यात आलेले आहे की पुण्यवान शोधून सापडत नाही. मग ते झाल्यावर सगळं काही व्यवस्थित म्हटलं पाहिजे की संबंध भूतांचं जरी राज्य म्हटलं तरी ते व्यवस्थित होऊ शकतं किंवा सैतानाचं म्हटलं तरी त्याचही होऊ शकतं. व्यवस्थित होऊ शकतं. पण तरीसुद्धा ही भूमी इतकी कडक आहे की कोणीही आलं तरी त्यांना हाकलून लावते, फेकून लावते, जाळपोळ करते त्या भूमीचे हे वैशिष्ट्य आहे. पण हे सगळं असूनसुद्धा एक जर आपण एवढं लक्षात ठेवलं की आपण अशा महान भूमीत जन्माला आलेले आहोत जी संबंध ब्रह्मांडामध्ये पुण्यवान आहे. ह्याच्याहून श्रीमंती काय असणार? ह्याच्याहून मोठेपणा काय असणार? ह्याच्याहून मान-आदर काय असणार?

अहो, तुमच्या पुण्याच्या मातीचे एवढे महत्त्व आहे. इथून सगळे लोक पुण्याची माती घेऊन गेले. मला माहिती नाही. आम्ही लंडनला आश्रम बांधला तर तिथे माती घेऊन आले. म्हटलं, 'ही माती कुठून आणली?' म्हणे, 'पुण्याची आम्ही माती घेऊन आलो.' त्यांना अक्कल आहे आणि इथे अतिशहाणे सांगतात की देव नाही. आणि ती माती घातली त्यांनी. मी कितीही वर्णन करून सांगितलं तरी तुम्ही म्हणाल, 'माताजी, ह्याचा साक्षात द्या.' आता देऊ कसा? कारण ह्या सर्व गोष्टी मध्ये मध्ये असल्यामुळे तुम्हाला ह्याच दिसतात कारण ह्या ढोबळ आहेत ना! ह्या बाह्यातल्या आहेत ना! ग्रेस आहेत ना! सूक्ष्मातलं



दिसायला सूक्ष्म व्हायला पाहिजे. तुम्ही सुक्ष्म झाला म्हणजे मी काय म्हणते ते तुम्हाला सगळं कळेल. म्हणून तुम्हाला सूक्ष्म व्हायला पाहिजे. तेव्हाच मी म्हटलं की या पुण्यनगरीमध्ये शक्तीचा संचार झाला पाहिजे.

आता पैशाचाच विचार इतका तो विचार सोडला पाहिजे. शक्तीने लक्ष्मी मिळते, मिळणार. पण लक्ष्मीसाठी आम्ही पूजेला आलो असं जर म्हटलं तर मुळीच मिळणार नाही. लक्ष्मीचा प्रसाद तुम्हाला आपोआप सहज मिळू शकतो. आणि पुष्कळांना मिळाला आहे. पण हे लक्षात घेतलं पाहिजे की आम्ही इथे घ्यायला काय आलो? शक्ति घ्यायला आलो. शक्ति मध्ये सर्व तऱ्हेच्या शक्त्या असतात. नुसतं महालक्ष्मी किंवा लक्ष्मी नाही. लक्ष्मीतून महालक्ष्मी, सरस्वतीतून महासरस्वती आणि कालीतून महाकाली हे सगळं मिळवायला तुम्ही आला आहात. जेव्हा या तिनही शक्त्यांमध्ये आत्म्याचे स्वरूप प्रगटीत होते, तेव्हा ह्या तिनही महाशक्त्या तुमच्या मध्ये जागृत होतात. तुमच्या हातातून व्हायब्रेशन्स, चैतन्य लहरी वाहताहेत. नुसता असा हात वर केला तर तुम्हाला लोकांना जागृत करतो. लोक म्हणतील कसलं काय? शक्यच नाही. असं कसं. नुसता हात असा वर केला तर ती म्हणे जागृती. शक्यच नाही. तुम्हालाही अविश्वास वाटू लागतो. खरोखर आम्ही असा हात वर केला तर आमच्या हातून होतं हे विशेष नाही. म्हणजे तुम्हाला आपली अजून कदर नाही आहे. तुम्ही हे समजत नाही की तुम्हाला काय मिळालंय. किती मोठे आहात तुम्ही. तुमच्या हातात नुसती कुंडलिनी जशी गणपतीच्या हातात ही शक्ति आहे तशी तुमच्या हातात ही शक्ती दिली आहे की नुसता असा हात वर केला तरी कुंडलिनी जागृत होते. तर आम्ही कोण आहोत? हे आधी लक्षात घेतलं पाहिजे. जर हे तुमच्या लक्षात आलं की आम्ही कोण आहोत? आणि आम्ही योगी लोक आहोत. आमच्यामध्ये योग्यांना कधीही नव्हती अशी शक्ति आहे.

आज किती योगी तुम्ही बघा आहेत या जगात. कोणी अशी कुंडलिनी जागृत केलेली तुम्ही ऐकलं आहे का कुठेतरी? पुस्तकात? कुठेही नाही. पण तुम्ही करता ना जागृत. तुम्ही रियलायझेशन देता ना लोकांना! मग ते कसं घडतंय. ते कसं होतंय. पण प्राधान्य जर आम्ही योगी आहोत या एका मुद्द्याला दिले तर बाकी सगळे मुद्दे आपोआप आतमध्ये बसतात. पण प्राधान्य इतर गोष्टींना आहे. हा एक त्रास आहे. तो जर तुम्ही सोडला आणि प्राधान्य फक्त की आम्ही योगीजन आहोत. आम्हाला योगीजनांसारखे, साधु-संतांसारखे राहायचे आहे. तसंच आम्हाला वागायचं आहे. तशीच आमच्यामध्ये धारणा असावी असा हृदयामध्ये जर विचार ठेवला तर कुंडलिनी शक्ती जी आहे ती तुम्हाला कुठल्याकुठे पोहचवून देईल कारण आपल्याला इतकं सहज मिळाले आहे. इतर लोकांना फार मेहनत करावी लागते. पुण्याला विशेष करून रस्त्याने एखादा मनुष्य चाललेला असला त्याच्याकडे एखादी नजर गेली तर त्याची कुंडलिनी चढते ही गोष्ट खरी आहे. पण जितकी सहज मिळते तितकीच त्याची कदर नाही. किंमत कळत नाही. विनामूल्य, विनामेहनत ही वस्तू मिळाल्यामुळे त्याची किंमत कळत नाही आणि स्वतःचीही किंमत कळत नाही. जर स्वतःची किंमत कळली आणि स्वतःची जबाबदारी कळली तर लक्षात येईल की आपण योगीजन, साऱ्या संसाराचे भले माताजी करायला निघाल्यात आणि तुम्ही आमचे हात आहात. तुमच्या हातून हे कार्य होणार आहे. आपलं वागणं कसं आहे तर सर्वप्रथम आपल्यामध्ये निष्ठा पाहिजे. सिन्सीऑरिटी पाहिजे. ज्या माणसामध्ये निष्ठा नाही, वरपांगीपणा आहे तो मनुष्य सहजयोगात कसा उतरणार. निष्ठा पाहिजे की आम्ही योगीजन आहोत. पूर्ण निष्ठेने आमचा आमच्यावर विश्वास आहे. आम्ही हे कार्य करू शकतो. आमच्या हातून कुंडलिनी वाहते. ह्याच्यात काही अहंकाराची गोष्ट नाही.

तुम्ही जर म्हणाल की आम्ही हिंदू, मुसलमान, ख्रिश्चन आहोत तर ही खोटी गोष्ट आहे. हे काहीतरी वाह्यातले लावून घेतलेले सर्टिफिकेट आहे. तुम्ही कोणीही असू शकता. म्हणजे खरंय ते एकच आहे की तुम्ही योगी आहात. ही तुमची खरी जात आहे. हा तुमचा खरा धर्म आहे. हे तुमचं खरं व्यक्तित्व आहे. आणि त्यात पूर्णपणे विश्वास ठेऊन निष्ठेने असा विचार केला पाहिजे की ह्या पलीकडे आम्हाला काहीही नको. जे मिळवायचे तेच त्याच्या पलीकडे आम्हाला काहीही नको. मग त्याच्यातच सगळं मिळतं. त्याच्याच खोलात, त्याच्याच गहनात, त्याच्याच उत्तरात सगळं तुम्हाला मिळतं. पण अजूनही 'माझी आई अशी, माझी बहिण तशी, माझ्या मुलाला हे झालं, ते झालं, नाहीतर आमच्याकडे ही प्रॉपर्टी पाहिजे, ते पाहिजे. माझ्या भावाचं तसं नीट करून द्या माताजी, माझ्या काकांचं तसं नीट करून द्या.' ते गुंतागुंतीचे प्रश्न. बरं जुने आले ते जरा बरे झाले, आता परत दुसरा

लॉट आला. त्यांनी सुरु केला तोच प्रकार. 'माझ्या आईला बरे नाही, माझ्या वडिलांना बरे नाही.' अहो, सगळ्यांना आई-वडिल आहेत. ते बरे आहे म्हणा एका अर्थाने, पण सहजयोगाला कधीकधी बाधक होते कारण सगळ लक्ष दुसरीकडे. जर तुम्ही ठीक झाले तर तुमचे आई-वडिल सगळे ठीक होतील. पण तुम्ही स्वतः ठीक व्हायला तयार नाहीत आणि तुमची अशी इच्छा आहे की सगळ्यांना माताजींनी ठीक करावे. म्हणजे या गोष्टी इतक्या गहनातल्या आहेत. त्या गहनतेत उतरतांना लक्षात ठेवले पाहिजे की आपण गहन आहोत की नाही? आपल्यामध्ये काही गहनता आहे की नाही? नाहीतर आपण संपूनच जाणार. एखाद्या विहीरीत जर तुम्हाला उतरायचे असले तर तुम्हाला सुद्धा त्याची पूर्ण मर्यादा माहिती असायला पाहिजे. जर तुम्हाला पोहोताच येत नसलं तर विहीरीत कशाला जायचं? तुम्ही संपून जाणार. त्या गहनतेत उतरणासाठी जी निष्णात व्यक्ती पाहिजे ती मी आहे का? ते मी मिळवलं आहे का? असा विचार केला पाहिजे. पण नाही माझ्या आईला बरं करा. अहो, तुमच्या आईला बरं करून तुम्हाला काय मिळणार आहे? स्वार्थच समजायचा आपला. काय मिळालं तुमच्या आईला बरं केलं म्हणजे. ती उठल्याबरोबर परत तुम्हाला रागवायला लागेल. डोक्यावर पदर घे नाहीतर हे कर, ते कर. बायकांचं असतं ना काहीतरी. नाहीतर बापाला बरं करं. कशाला? परत तो आणखीन तुम्हाला त्रास देणार. देणार असं नाही, पण माझं काय म्हणणं की अत्यंत वरपांगीपणाने आपण बघितलं तर हे असे त्रास होतात. पण गहनतेत बघितलं की मी माझाच भाऊ, मीच माझी आई आणि मीच सगळं काही आहे. मला तुम्ही बरं करा. मी ठीक होऊ दे. माझं भलं होऊ दे. तुमच्यातच सर्व काही बसलेत तर ते सर्व काही ठीक होणार. सगळे जर तुमच्या शरीरात वास करतात तर तुमचं जर बरं झालं तर ते बरे होणार. तेव्हा अशा वरपांगी, क्षुल्लक, क्षुद्र वस्तुंवरती आपलं चित्त ठेवून तुम्ही एवढं मोठ्ठु गमावू नका.

एकतर पुण्याच्या नगरीत जन्माला आलात. केवढं पुण्य कमवले असेल ते. केवढं पुण्य कमवून तुम्ही या पुण्यनगरीत जन्माला आलात आणि इथे जन्माला येऊन आता ते घालवायचे आहे का? आणि या धर्माच्या बाबतीतसुद्धा डोकं लक्षात ठेवलं पाहिजे. ह्याला काही धर्म म्हणता येतो का? ज्याच्या सगळ्या वरपांगी गोष्टी तो धर्म खरा, ज्याच्यामध्ये मनुष्याला शांती मिळते. तो धर्म खरा ज्याच्यामध्ये मनुष्याला सत्य मिळतं. तो धर्म खरा ज्याच्यामध्ये मनुष्य एक पुण्यवान आत्मा होवून सगळीकडे प्रेम संचारतो. तो खरा धर्म आहे. बाकी धर्म म्हणजे थोतांड आहे. आणि आजकालचे सर्व धर्म तर एकाहून एक बरे आहेत. मला तर आजपर्यंत एकही धर्मगुरू भेटला नाही जो आत्मसाक्षात्कारी आहे. अहो, म्हणे 'आम्ही धर्मगुरू.' असं का! आणि कुंडलिनी तिथे खाली दबून बसलेली. तुम्ही कसे धर्मगुरू? कोणत्या धर्मात सांगितलेले आहे की आत्मसाक्षात्कार झाल्याशिवाय कोणाचे गुरू होऊ शकता? असे अधर्मी लोक आज धर्मावरती येऊन बसलेत आणि स्वतःला धार्मिक म्हणवतात. त्या धार्मिकतेचा काहीही फायदा नाही. त्याने मनुष्य क्रूर, राक्षसी, भयंकर तरी होईल किंवा अगदी दबू, घाणेरडा विचित्र तरी होईल. त्यातून चांगुलपणा कधीही निघणार नाही. हे अगदी मला दिसतंय. जेवढे आजकालचे धार्मिक लोक मी पाहिलेत त्यांचा हा प्रकार. इथे बघा, तुम्ही इंग्लंडच्या लोकांना बघा दारू पिऊन धूत. कशाला म्हणे? 'आम्हाला आता चर्चला जायचंय म्हणून आम्ही दारू प्यायलो.' दुसऱ्यांचे कशाला बघायचं स्वतःच बघा. आपल्याकडे हिंदू धर्मातला प्रकार. नंतर आणखीन आहेत ना ख्रिश्चन लोक कामातून गेलेत. मुसलमान, त्यांची वाट लावली त्यांनी. भांडत बसलेत, जगभर भांडतात. शीख लोक ते तिकडे मूर्खपणा करताहेत. कोणत्या धर्मात सांगा लोकांचे डोकं ठीक आहे? सगळ्यांची डोकी खराब आहेत. आपण कशाला त्या मूर्खांबरोबर लागायचे? कोणी तरी आपल्या हृदयाला शांती दिली का? सर्व धर्मांमध्ये हा प्रकार असल्यामुळे हे सगळे धर्म 'सर्व धर्मांनाम परित्यज्य, मामेकं शरणं रजः' म्हटलं आहे एवढ्यासाठीच. जो खरा धर्म आहे तो घेतला पाहिजे.

आता एवढे मोठे मोठे झाले हे सगळे. ख्रिस्त काही कमी नव्हते. एवढे मोठे आहे तुम्हाला माहितीच आहे. कृष्ण काही कमी होते. राम काही कमी होते. एकेक अवतरणं झाली. मोहम्मद साहेब काही कमी होते, नानक साहेब काय कमी होते. पण त्यांचा मात्र ठिकाणा लावून ठेवला सगळ्यांनी. मी कोणत्याही धर्माची साथ द्यायला तयार नाही आता. सगळ्यांना बघून ठेवलंय. सगळे एकाहून एक मूर्ख आहेत. देवाच्या नावावर मूर्खपणा करताहेत. आणि ह्यांना अशी सजा मिळणार आहे, ह्या जन्मातच मिळणार आहे. ज्यू आहेत ते दुसरा नमुना आहे, मुसलमान आहेत तो तिसरा नमुना, ख्रिश्चन लोक आहेत ते चौथा नमुना, हिंदू लोक

आहेत ते दुसरा नमुना, जैन तो तर काय विचारायलाच नको. या सर्व धर्मात नुसते थोतांड, वरपांगीपणा आणि खोटेपणा इतका पसरवलेला आहे आणि पैसे बनवणे. मुसलमान लोकांच्यामध्ये पाच वेळा नमाज पढायचे. बस, नमाज पढले म्हणजे झाले. आणि त्याच्यानंतर वाटेल ते धंदे करा. हा देश त्याच्याशी भांडतोय, तो देश त्याच्याशी भांडतोय पण सांगायची सोय नाही.

मोहम्मद साहेबांनी सांगितलेले आहे की अशी वेळ येणार आहे त्याला ते कयामा असे म्हणतात. अशी वेळ येणार आहे ज्यावेळेला मनुष्याचे पुनरुत्थान होईल, पुनरुत्थानाची जेव्हा वेळ येईल तेव्हा त्यांचे हातपाय बोलतील, साक्षी देतील हे सहजयोग सगळं सांगून गेलेत. ते ही म्हणत असतील काय मूर्खाना सांगून गेलो मी. कोण मुसलमान आपल्याकडे येणार आहे. आलेत म्हणा आता. अशी धर्माची आपण वाट लावली आहे. देवळात जाऊन बघा.

परवा एक मुलगा आला होता. तो गांज्या घेतो. म्हटलं तुला कुठे मिळाला हिंदुस्तानात गांजा? महालक्ष्मीच्या देवळात म्हणे पुजारी कडे असतो. असं का? अगदी खरी गोष्ट आहे. अहो, खरी गोष्ट आहे. महालक्ष्मीच्या देवळात, ते ही आणखीन कुठेही नाही. आता या पुजाऱ्याला कुठे ठेवायचे सांगा? नरकात तर अशा लोकांना जागा नाही. आणखीन काही तरी एक बनवावे लागेल त्यांच्यासाठी. महालक्ष्मीच्या देवळात बसून गांजा वाटतोय आणि विकतोय. म्हणजे देवळात कोणी जाणार नाही पोलिस पकडायला. गेलाच तर त्याच्याविरुद्ध ॲक्शन घेतील की 'आमच्या देवळात आलास तू.' पण देवळात बसून तुम्ही गांजा विकता त्याला काही मज्जाव नाही. अशा सर्व धर्माधपणामुळे पुष्कळांनी सांगितलं देवच नाही आहे. अहो, धर्माध कुणी असलं म्हणून धर्म नाही? देवाच्या नावावर कुणी पैसे कमवले म्हणून देव नाही? तेव्हा तुम्हा लोकांना खूप गहन उतरायला पाहिजे. तुमचं आयुष्य असं झाले पाहिजे की लोकांनी म्हटले पाहिजे की हे खरे धार्मिक. यांच्यामध्ये खरा धर्म आहे. आम्ही धर्माला सहजयोगात जाणलंय. सहजयोगामध्येच आम्ही समजलो धर्म काय. साक्षात्कार ही एक घटना आमच्यात घटित झालेली आहे. काही खोटं नाही आहे. पण ते सांगण्यासाठी, समजवण्यासाठी सुद्धा तुम्ही गहन उतरायला पाहिजे. तुमच्यात गहनता आहे. जर तुम्ही तुमच्यात ती गहनता आणली नाही तर मात्र लोकांच्या समोर सांगतांना लोक म्हणतील 'राहू द्या. आम्ही पाहिले आहेत तुमचे सहजयोगी कसे आहेत.' तेव्हा सगळ्यांनी त्या गहनतेकडे लक्ष ठेवले पाहिजे. वरपांगी करायचे नाही. वरतीवरती दाखवायचे नाही. नसते तमाशे करायचे नाही. मला सगळ्यांचे समजते.

पूजेला शुद्ध मनाच्या लोकांनी बसायचे. नाहीतर बसू नये. शुद्ध मन करून बसायचं. बेकार आहे. मी एवढी मेहनत करून फायदा काय? जर तुमची दगडाची मनं आहेत तर त्याच्यात काय प्रतिबिंब येणार? मन अगदी शुद्ध करून बसा. निरागस आणि प्रेमात बसायचे आणि मिळून घ्यायचे. जे मिळवायचे आहे ते मिळवायला तुम्ही इथे आलात. वेळ व्यर्थ घालायला तुम्ही इथे आला नाहीत हे लक्षात ठेवायचे. इथे खरा धर्म जागृत करण्यासाठी आणि सत्य आपल्यामध्ये प्रकट करण्यासाठी तुम्ही इथे आलेले आहात. त्याच्यासाठी तुम्ही शक्तीची पूजा मांडलेली आहे. आजची शक्तीची पूजा विशेष आहे कारण ह्यावेळेला शक्ती ही गौरी स्वरूप आहे. गौरी म्हणजे साक्षात कुंडलिनी. ती कौमार्यावस्थेत आहे. त्या कौमार्यावस्थेत तुम्ही तिची पूजा मांडलेली आहे. कौमार्याचा अर्थ असा आहे अबोधिता, इनोसन्स. त्याची जागृती. जसा गणपती, तशीच शक्तीची जी कुमारी अवस्था आहे ते गणपतीचे वरदान आहे. तेव्हा मनामध्ये असा विचार करून किती निरलसता किंवा ती निर्मलता आमच्यामध्ये पूर्णपणे रुजली पाहिजे. आतून बाहेरून आम्ही एक स्वच्छ झालो पाहिजे. त्या गहनतेत आपण आज पूजा करूयात.